जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

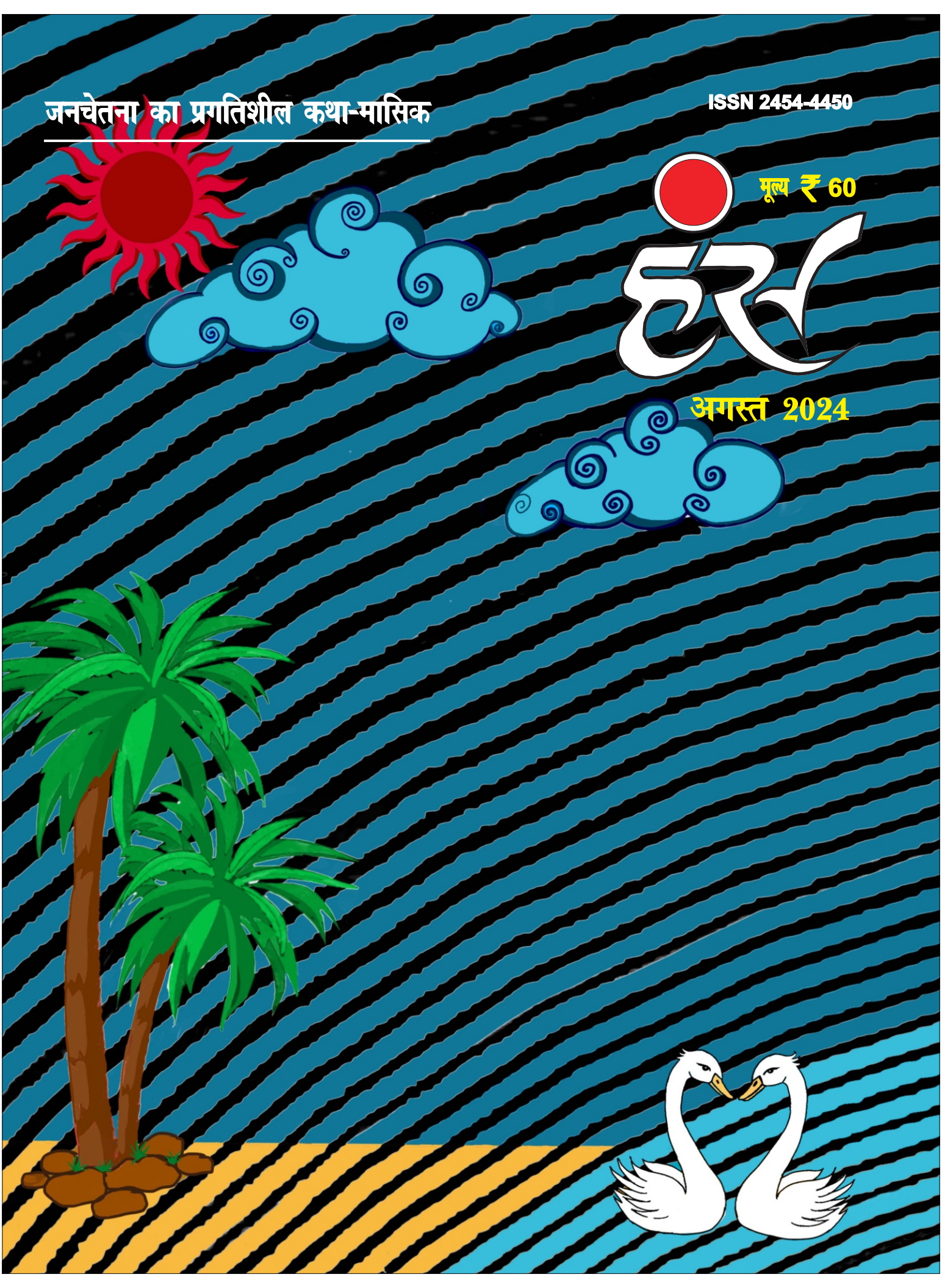

हंस

मूल्य ₹ 60

अगस्त 2024

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
सोशल मीडिया
शैलेश गुप्ता
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
अशोक अंजुम, संदीप राशिनकर, शैलेंद्र सरस्वती, सुरेश बरनवाल,रोहित प्रसाद

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अगस्त, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-454 वर्ष : 39 अंक : 1 अगस्त 2024

आवरण : पारुल तोमर

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. साहित्य का नेपथ्य : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

मुड़-मुड़ के देख
11. नासपीटी कलट्टरी : प्रेम कुमार
('हंस', नवंबर 1986)

अभी दिल्ली दूर है
18. मृदुला की दिल्ली : मृदुला गर्ग

कहानियां
26. देख लो... अब क्या है ! : श्याम जांगिड़
32. शनेल नंबर-5 : प्रभात रंजन
38. बयाज़ : समीना खान
44. एक जिग जैग मुहब्बत : श्रीधर करुणानिधि

गोशा-ए-ईरान जबान-ए-हिंदुस्तान
56. माह मुनीरः मीतरा अलयाती
58. पर्दे और हम : नसरीन तोरावी
59. मैं और छुटकी : बिलक़ीस सुलेमानी
61. खुशकिस्मत औरत : मनीज़े आरमीन
(अनुवाद : नासिरा शर्मा)

कविताएं
54. राजकुमार कुम्भज, अनामिका अनु
55. प्रेम प्रकाश, रंजना जायसवाल, तापस शुक्ल

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य
63. आधुनिक दर्शन की विकास यात्रा :
अशोक कुमार

ग़ज़ल
17. जय चक्रवर्ती 69. सिराज फ़ैसल ख़ान
80. पूनम पांडे 89. ब्रिजेश माथुर
97. मनीष बादल

लघुकथा
74. सुकेश साहनी 87. सुरेश बरनवाल

बीच बहस में
76. क्या हम कला से प्रेम करते हुए भी कलाकार से नफरत करते हैं ? : किंशुक गुप्ता

परख
68. सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ सक्षम प्रतिकार : राम विनय शर्मा
70. अन्विति यानी सहज का सौंदर्य :
रोहिणी अग्रवाल
75. जीवन और जीवट से भरपूर कहानियां :
प्रियदर्शन
78. दो गज जमीन भी न मिली कू-ए-यार में :
नीरज खरे
81. अस्मिता के संघर्ष का त्रासद अंत :
के.बी.एल. पांडेय

शब्दवेधी/शब्दभेदी
84. एक टुकड़ा मध्ययुग : तसलीमा नसरीन

साहित्यनामा
90. साहित्यनामा : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
94

साहित्य का नेपथ्य

साहित्य के वर्तमान परिदृश्य में जिस पैमाने पर स्तरीय साहित्य रचा जाना चाहिए, उसमें कमी खलती है. 'हंस' में हर माह विचार के लिए लगभग सौ कहानियां अवश्य आती हैं, किंतु छंटाई के बाद एक अंक के लायक कहानियां निकल पाएंगी, यह संदेह अंत तक बना रहता है. ऐसा नहीं है कि उत्कृष्ट लेखन नहीं हो रहा. कुछ लेखक बेहतरीन लिख रहे हैं, नई जमीनें तोड़ रहे हैं, नए रास्ते गढ़ रहे हैं और उनका होना बहुत ही आश्वस्तिदायक है. पर रचनाओं का भंडार हमेशा खाली मिलता है. यह भी संभव है कि यह डरावनी तस्वीर हम बेकार पड़ते लेखकों की बूढ़-भड़ास हो और संभव यह भी है कि इसमें किंचित सच भी हो. जो भी हो, इस बात की आवश्यकता तो महसूस होती ही है कि लेखकों के साथ विशेष तौर पर लेखन में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के साथ निरंतर संवाद हो, बहसें हों और कार्यशालाएं आयोजित की जाएं. नवलेखकों को आधुनिक साहित्य की भिन्न धाराओं के बारे में, धाराओं को प्रभावित करते दर्शन के बारे में जागरूक करना हमारी जिम्मेदारी है.

लेखक क्या लिखें और उससे भी बढ़कर क्या न लिखें, दो पंक्तियों के बीच के सन्नाटे में कैसे कोई कहानी प्रकट हो जाती है और कि कैसे जरूरत से ज्यादा कथा को समझाने का प्रयास, अतिशय वर्णन, अप्रासंगिक ब्योरे कहानी को स्थूल बना देते हैं, ऊपर से हर पांच-दस पंक्तियों के बाद झाड़ा गया लेखकीय दर्शन तो कहानी की कपाल-क्रिया तक कर डालता है. कुछ लोग अभी भी 'महान पारिवारिक चित्र' वाले हिंदी सिनेमा की तरह कहानी को एक पूरा मनोरंजन पैकेज बनाते हुए उसमें तीन-चार अंतरों का गीत या किसी से उधार ली गई पूरी की पूरी कविता तक पेलना नहीं भूलते. अगर संभव होता तो शायद नृत्य का समावेश भी कर चुके होते. जाहिर है विषय-वस्तु से लेकर भाषा, शिल्प या कथा के औचित्य तक पर जो विमर्श होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है. हमें रचनात्मकता और उसके दर्शन के अतीत को समझना होगा जिससे कि हम भविष्य के द्वार खोल सकें. हमें अपनी बुद्धिमानी, अपनी चतुराई और अपनी नादानियों को अगली पीढ़ी के हवाले कर देना होगा कि उन्हें नए मार्ग तलाशने में किंचित सुविधा हो. आगे देखने से पहले हमें प्रासंगिक अतीत में भी जाना होगा.

किसी भी वक्त के दर्शन का प्रभाव जाने-अनजाने में अपने वक्त की रचनात्मकता पर पड़ता ही है, चाहे वह साहित्य हो या अन्य विधाएं. दर्शन समय की चेतना का हिस्सा रहता है. ऐसे में कोई यह दावा नहीं कर सकता कि उसकी कोई भी सामयिक रचना दर्शन से बिल्कुल अछूती बची है. बारिश की बूंदों के बीच से बिना भीगे निकलना संभव नहीं होता. जैसे जातक कथाओं में बुद्ध का दर्शन झलकता मिल जाता है तो 'पंचतंत्र' में अनेक स्रोतों से आता कुशल राज चलाने का दर्शन.

खैर, यह सर्वविदित है कि आधुनिक साहित्य ने अपनी यात्रा पश्चिम से आरंभ की थी जहां कई शताब्दियों तक उसका विकास होता रहा. इस तथ्य को राष्ट्रवादी चश्मे से देखने पर बहुतों का कलेजा फटता है लेकिन सच यही है. आधुनिक लेखन का आरंभिक दौर इतालवी पुनर्जागरण के वक्त में तय किया जा सकता है, जब यूरोप में अन्य कलाओं के साथ-साथ दर्शन और साहित्य ने करवट ली थी, अलबत्ता अपवाद के तौर पर रोजर बेकन जैसी गिनी-चुनी विलक्षण प्रतिभाएं उससे भी दो सदी पहले प्रकट हो चुकी थीं. इटली के टस्कनी से आरंभ हुए और फ्लोरेंस में केंद्र स्थापित कर पुनर्जागरण की लहर इंग्लैंड तक जा पहुंची. इस दौर में वहां जॉन मिल्टन और शेक्सपियर जैसे महान रचनाकार हुए. शेक्सपियर प्लूटार्क (रोमन दार्शनिक और इतिहासकार), चौसर और थॉमस मोर से प्रभावित रहे.

उत्तर पुनर्जागरण काल में और विशेषकर प्रबोधन काल में आधुनिक साहित्य और दर्शन अपनी ऊंचाइयां प्राप्त करने लगे थे. प्रबोधन काल या एज ऑफ रीजनिंग 17वीं से लेकर 18वीं सदी के उत्तरार्ध तक का माना जाता है. इसकी पृष्ठभूमि तैयार करने में, 'मैं सोचता हूं इसलिए मैं हूं' ('आई थिंक देयरफोर आई ऐम') जैसी महत्वपूर्ण सूक्तियां देने वाले फ्रेंच दार्शनिक रेने देकार्त का खासा योगदान रहा. इस काल की निर्मिति में आइजेक न्यूटन से लेकर वॉल्टेयर, रूसो, मोंटेस्क्यू, कांट जैसे एक से बढ़कर एक हस्तियों ने अपनी भूमिका निभाई. इसमें विशेष तौर पर फ्रेंच दार्शनिक डेनिस दिदेरो (1713-1784) को रेखांकित करना आवश्यक है, जिसने ज्यां लेरों देलांबेर के साथ मिलकर 'आंसिक्लोपेडी' या अंग्रेजी में 'इनसाइक्लोपीडिया' की रचना की. उसने ज्ञान को चर्च के चंगुल से मुक्त कर सर्वसाधारण के लिए